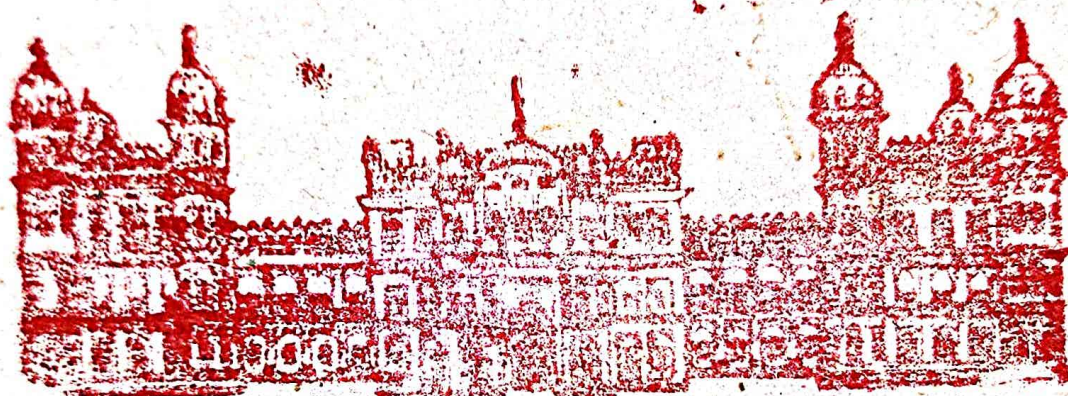


श्रीजानकी-चालीसा



श्रीजानकी मन्दिर

(श्री प्रेमनिधि प्रणीत)

प्रतिदिन सश्रेम दैनिक पाठ

निरसीम वारुणा पूणा

वात्सल्यैक महोदधि

कान्ता श्रीराघवेन्द्रस्य

सर्वदा पातु जानकी ॥

निलाम्भोजदलाभिराम नयनां

नीलाम्बरालङ्कृताम् ॥

गौराङ्गी शरदिन्दु सुन्दरमुखीं

चिस्मैर बिम्बाधराम् ॥

कारुण्यामृत वषिणी हरि हर

ब्रह्मादिभिर्वन्दिताम् ।

वन्दे भक्तजनेप्सितार्थ फलदां

रामप्रियां जानकिम् ॥

श्रीजानकी बल्लभ दुलहा भागवान् की जय

श्रीमत रामानन्दाचार्ययि नमः

श्रीप्रेमनिधि-प्रणीत

श्रीजानकी-चालीसा

दोहा:-जय मिथिला अवधेश्वरि जय जय

जनक किशोरि ।

चरण कमल बन्दन करत, 'प्रेमनिधी'

कर-जोरि ॥

चौपाई

जय जय श्री मिथिलेश किशोरो ।

जब रघुवर मुख-चन्द चकोरी ॥

जय कञ्चन वन विहरन शीला ।

जय प्रमोद वन सुन्दर लीला ॥

उमा-रमा-ब्राह्मणि वन्दिता ।

जय अयोनिजा जय अनिन्दिता ॥

आद्यशक्ति साकेत-बिलाशिनि ।

जय अनन्त अनुपम अविनाशिनि ॥

दुख मोचनि सुख सम्पति दायिनी ।

जय आह्लादिनि जय अनपायिनि ॥

जय सर्वेश्वरि जनक दुलारी ।

मातु सुनयना प्राण-पियारी ॥

जय करुणानिधि पङ्कज लोचनि ।

रूपराशि रति गर्व विमोचनि ॥

अष्ट-सिद्धि नव निधि, बशकरणी ।

भक्ति शक्ति दायनि भव तरणी ॥

धनुष टारि प्रभुता प्रगटाई ।

प्रणमिस करि ॥ भु छवि दरसाई ॥
सिथिला धरणो तिलक बनाई ।

युगल रूप माधुरि बरसाई ॥
सोहत राम सिया की जोरी ।

लखि साजस रति मदन करोरी ॥
सुर, नर, असुर, गर्व हरि लीन्हौ ।

जनक जाति पुर पावन किन्हों ॥
जो तब कृपा कोर कण पाव ।

पामर जन ब्रह्माण्ड बनावै ॥
रामवल्लभा अग जग कारिणि ।

सिथिला, कामद अवध विहारिणि ॥
चन्द्रकला तब आज्ञा पाई ।

लाई विपिन सहित रघुराई ॥

गौतम शतानन्द, सुख पाये ।

नारद वचन सत्य मन भाये ॥

लक्ष्मीनिधि है तेरा भैया ।

जिनको गावत सुयश रमैया ॥

चन्द्रकलादिक सखा हलोनी ।

जित सम जग कोउ है नहि होनी ॥

तब लिला सुख निरलि सनेहा ।

योग रोग मन तज्या विदेहा ॥

शबरी, गीध, कपिश निबार्जे ।

लक्ष्मी विभीषण अजल विरार्जे ॥

खर-दूषण-रावण गति पाई ।

तारे अमित लोक सुखदाई ॥

शिखर-शत-दण्ड विजय तप कीन्हो ।

तुम्हि छाड़ प्रभु वरनही दीन्हो ॥

युगल रूप आराधना लाग ।

तव शिव परम प्रेम-रस पागे ॥

सीता सहित नाम जप कीन्हे ।

द्रवत राम सिय परिकर चोन्हे ॥

दश अपराध न कबहु लागे ।

मुगल नाम सुमिरत अनुरागे ।

घोर ब्रम्ह हत्या शिव लागी ।

मिथिला रज परसत सो भागि ॥

जय साकेत अधिश्चरी सीते ।

राम प्रिया जगदम्ब पुनःते ॥

अद्भुत चरित किसे जग माही ।

कोविद कवी कहि सकत सो नाही ॥

सहस वदन रावण तुम मारयो ।

राम सुयश त्रिभुवन विस्तारयो ।

भरत शत्रुहन लक्ष्मण हारे ।

१३
यह प्रताप तव तनय दिखायो ।

लव-कुश वेद विदित यश गायो ॥

दुष्ट निशाचिर अति दुःख दीन्हे ।

सो मन गहँ किञ्चि नहिं लीन्हे ।

दाण्ड देत हनुमन्त बुझाइ ।

रक्षा कीन्ह परम करुणाई ।

घुल लज्जित प्रभु सभा विचारी ।

क्षमा शील जय अवनि कुमारी ॥

चरण-शरण आयो जन तेरी ।

कृपा करहु कीजै जनि देरी ।

शीत विवश सी सी सिसकारयो ।

करुणामयि निज नाम विचरयो ॥

कीन्हो तेहि साकेत—निकसी ।

धन्य—धन्य जय करुणा राशी ॥

विविध रूप घरी सुख-सुर नासी ।

परिचर्या नित करत सुरवारी ॥

तत्त गुण गावत श्री रघुईरि॥

सुद-मंगल-शुभ देत अघाही॥

करि करुणा भिज दर्शन दीजै ।

वरण शरण सियजु ररित लिजै ॥

❀ दोहा ❀

करुणामृत वरसत रहै ।

हृदय भरे अनुराग ॥

प्रनिधि लहरत रहै ।

बाढै सरस सुभाग ॥

चालिसा यह नित्य जो ।

पढै सुनै अरु नाय ।

रिधि सिधि सुख सम्पति सकल,

प्रेम भक्ति सरसाय ॥

❀ सियावर रामचन्द्र की जय ❀

श्री मिथिला-चालीसा

मिथिला महिमा अबधि है,

मिथिला मंगल रूप ।

एक बार मिथिला गये,

नर न पडे भवकूप ॥

जय जय श्री मिथिला महारानी ।

जय जय प्रेम भगति रस दानी ॥

दिव्य विभूति परम सुख खानी ।

जय जय रसिक राज रजधानी ॥

विदानन्द मयि परम प्रकाशी ।

जय मिथिले अगणित गुण राशी ॥

सीता पद रज अंकित धरणी ॥

महिमा अमित वेद बहु वरणी ॥

भूमि तिलक गावत श्रुति सन्ता ।

महिमा अमित अगाध अनन्ता ॥

सप्तपुरी जे मुक्ति प्रदाता ।

तिनकी प्राण रूप सुख दाता ॥
 गौतम-याज्ञवल्क्य ऋषि राजा ।
 नव योगेश्वर सन्त समाजा ॥
 परम हंस शुकदेव सुजाना ।
 पायो परम तत्त्व विज्ञाना ॥
 जय मिथिले सद्गुण गण आगरी ।
 कृपा दया वात्सल्य सागरी ॥
 परात्परा श्री शक्ति निकेता ।
 राजत रघुवर सीय समेता ॥
 आह्लादिनी सियकी आह्लादिनी ।
 प्रेम परा भक्ति आस्वादिनी ॥
 बार-बार तब चरण मनावौं ।
 युगल प्रेम रस सिंधु समावौं ।
 कमला-विमला-बिरजा धारा ।
 दूधमती अति पुण्य अगारा ॥

पावन परम कुण्ड सर राजै
गंगा सागर आदि विराजै ॥
घर-घर मन्दिर ठाकुर वारी
अर्चत पूजत शुचि नर-नारी
परम रम्य प्रभुकौ अति प्यारी ।
सि य की जन्मभूमि सुख कारी ॥
'सखि सीता कहु' चिडिया बोले ।
'सीता-सीता' वचन अमोले ॥
सरस सुमन सुरभित अति शोभे ।
पुष्प, वाटका लखि मन लोभे
परम पूज्य पूजे सब देवा ।
मन वाञ्छित पावै करि सेवा ॥
परिक्रमा जो करै सनेमा ।
उपजत प्रभु पद पंकज प्रेमा ॥
जन्म महोत्सव जनक लली को ।

राम विवाह कर अति नौको ॥
रसिक सन्त प्रभु रस वरसावै ।
गारि गाय रघुबीर रिझावै ।
जो कोउ मिथिला नाम नाम पुकरे
सो नर श्री बैकुण्ठ सिधारे
स्वपनहुँ में जो मिथिला सुमिरै ॥
ताकर दोष दुरित सब जरै ॥
बाह्याभ्यन्तर रिपुगण नाशै ।
श्री सिय विय से मिलन करावै ॥
उरनें मिथिला तत्र प्रकाशै ॥
थिर पद पंकज प्रेम बढावै ।
लाभ परम नर तन को पावै ।
जो नर मिथिला के गुण गवै ॥
जगा के सकल तीर्थ अति पावन ।
श्री मिथिला-मणि मुकुट सुहावन ।

राम रूप मिथिला के वासी !!
 जनक लली के चरण उपासी !
 धिक् धिक् जो मिथिला नहि देखी !
 नर तन लाभ न लहो विशेखी !!
 रसिक सन्त ज्ञान की अति प्यारी !
 मिथिला प्रीति बड़ावन हारी !!
 देश विदेश कतहुँ कोउ रहै !
 मिथिला-मिथिला-मिथिला कहै !!
 प्रातः काल उठिकै शिर नावै !!
 पाप ताप तेहि निकट न आवै !!
 कृपा करिय मिथिलेश कुमारी !
 निरखौ मिथिला धाम सुखारी !!
 लय-जय श्री मिथिले जगदम्बे !
 जय-जय दीन हीन अवलम्बे !!
 जय श्री मिथिले जय अघहारी !

शरणागत मैं मातु तुम्हारी ॥
प्रभु को प्रगट परम पद धामा ।
वेद विदित अति ललित ललामा ॥
दुलहा राम सिया दुलहिन की ।
जय रसिकन के जीवन धन की ॥
जयति जनकपुर जय हो तेरी ।
विनती प्रभु सुनिये अब मेरी ॥
रसिकज संग रस मोद बढ़ावौं !!
प्रेमनिधी जग महँ लहरावौं !!
जो मिथिला चालीसा गावै !

भक्ति शक्ति सुख सम्पति व वै !!

✽ दोहा ✽

जय मिथिले जय जनकजे

जयति जनकपुर धाम ।

प्रेमनिधी पद कमल में

पुनि पुनि करत प्रणाम ॥

✽ जनकपुर जनकलली की जय ✽

✽ श्री मिथिला—चालीसा सम्पूर्ण ✽

अथ जानकी द्वादश नाम स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीजानकी द्वादश नाम स्तोत्रमंत्रस्य नारद-
ऋषिः अनुष्टुप् छंदः त्रिगुणात्मिका शक्तिः श्रीजानकी
देवता श्रीसीता प्रोत्यर्थे जपे विनियोगः ।

नमामि जनक नंदनी अजादि देवं वंदनो ।

सदा सुसंत रंजिनो पिशाच गर्व गंजिनो ॥
मुनीन्द्र वास रागिणी, श्रीरामवाम भागिनी ।

सुबुद्धिदा प्रमोदिनी, श्री कोशला विनीदिनी ॥
गुणादि वेद गायिनी, सुभक्त सुखदायिनो ।

अतंत दुःख मोचनो, नमोस्तु विश्वलोचनी ॥
पुनोत नाम द्वादशं, पठति त्यक्त आलसं ।

प्रसन्न सर्व देवकं, वदन्ति राम सेवकं ॥

अथ श्री सीता स्तोत्रम्

एकदा नैमिषारण्ये शौनकाद्याः महर्षयः नारदं परिप-
प्रच्छ कथां परम पावनीम् । १।

कथयस्व महावाही स्तवंच परम पदम् ।

यस्य श्रवण मात्रेण पर्व पापैः प्रमुच्यते । २।

नारद-उवाच—

सीता स्तौत्रं प्रवक्ष्यामि सर्वं पाप प्रणाशनम् ।

सीताच जानको देवी मथिली राघवप्रिया ।३।

लोकमाता जगद्धात्री कुशस्यजननी शुभा ।

वैदेही वेद माता च सावित्री भुवनेश्वरी ।४।

रामस्य महिषीपुण्या सर्वं पाप प्रणाशिनी ।

अयोनिजा महाविद्या महापातक नाशिनी ।५।

नमस्तस्यै जगन्मात्र्यै सीतायै च नमोनमः ।

इमं स्तौत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।६।

सर्वं पाप विमुक्तात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ।

पुत्रार्थी लभते पुत्र धनार्थी लभते धनम् ।७।

मोक्षार्थी लभते मोक्षं कन्या विदति सत्पतिम् ।

तस्य गृहे सदा लक्ष्मी कहिञ्चिन्नेव मुञ्चति ।८।

दातव्यं भक्ति युक्ताय शिष्याय परमात्मने ।

दांभिकाय न दातव्यं भक्तिहीनाय सर्वथा ॥

गोपोनयामिदं स्तौत्रं त्रिषु लोकेषु सर्वदा ।९।

इति श्रीरुद्रयापले भैरव शिव संवादे

श्रीसीतास्तोत्र सम्पूर्णम्

श्रीजनकपुर बालीसा

रचियता- श्री रसमोद निधि जी-

जयति जनकपुर धाम वर, जयति सिया सुकुमारि ।
विनय करत "रसमोदनिधि" चरण कमल शिरधारि ॥

जयति सुनैना-अम्बिकै,

जयति जनक मिथिलेश ।

पद-पकज वन्दन करौ,

"निधिरसमोद" हमेश ॥

—●—

जयति जनकपुर धाम सुहावन ।

महिमा भय अलि पावन - पावन ॥१॥

जयति जनकपुर जनक दुलारी ।

पर पुनीत नाम अवहारी ॥२॥

सब विधि परम सुहावन देशू ।

(१८)

नाम लेत सब मिटत कलेश ॥३॥

सिय की जन्म भूमि सुखराशी ।

लखि तरसत बैकुण्ठ निवासी ॥४॥

शुचि सुन्दर श्रो धाम जनकपुर ।

करत सुयश-वर मान सदा सुर ॥५॥

जनक नगर की महिमा भारी ।

गावहि नित विधि-विष्णु, पुरारी ॥६॥

दिव्य सच्चिदानन्द - स्वरूपा ।

वरसत जहँ सिख प्रेम अनूपा ॥७॥

को कहि सकै सुकीरनियाकी ।

शारद - शेष-विमल-मति थाकी ॥८॥

जनकपुरी महिमा अति पावनि ।

त्रिविध-पाप दुख-दोष नशावनि ॥९॥

धनि मिथिला धनि जनक दुलारी ।

धन्य जनकपुर के नर-नारी ॥१०॥

जनक नगर-मिथिला-रजधानी ।

सुयश पुनीत पुराण अखानो ॥११॥

करै राज जहाँ जनक नरेशू ।
 भूमि-तिलक प्रिय पावन देशू ॥१२॥
 चार सुमुख्य द्वार मन हारी ।
 जाके द्वार पाल त्रिपुरारी ॥१३॥
 चतुरानन नित वेद - उचारे ।
 ब्रह्महुँ जिनके द्वार पधारे ॥१४॥
 सब श्री जनकलली प्रभुताई ।
 ब्रह्महुँ जहाँ करे पहुताई ॥१५॥
 रग भूमि को छवि अति न्यारी ।
 अवलोकहु सिय - अवध बिहारी ॥१६॥
 जनक-महल मणि-मण्डप शोभा ।
 दुल्हा-दुलहिन छवि-मन लोभा ॥१७॥
 धन्य धन्य श्री जनक - सुनैना ।
 जाकी उपमा कहत बनैना ॥१८॥
 जनक नगर नर-नारि सताने ।
 जो प्राणहुं ते प्रिये सिय माने ॥१९॥
 जिनके प्रेम बिबश, प्रभु आये ।

मिथिला - मंगल - मोद मचाये ॥२०॥

कोहवर-सुख लूटहि मिथिलानी ।

उमा-रमा शारद सम ज्ञानी ॥२१॥

निज कुल इस्ट देव सिय मानहि ।

सिय तजि अन्य किमपि नहि जानहि ॥२२॥

सिय पद-रज रति-भाग्य वखाने ।

श्री मिथिला-रस-शान गुमाने ॥२३॥

परम् प्रणम्य जनकपुर वासी ।

जिनके दरस होत अघ नाशी ॥२४॥

सकल सुकृत-निधि साधु सयाने ।

धर्म शील-गुण-रूप निधाने ॥२५॥

जनक नगर यश सुर-मुनि गावै ।

निगमागम गुनि पार न पावै ॥२६॥

घर घर कोहवर-जनक नगर में ।

दुलहा दुलहिन छवि घर-घर में ॥२७॥

सकल नारि-नर मिथिला-वासी ।

दुलहा दुलहिन भाव उपासी ॥२८॥
लक्ष्मी निधि-सियाजू के भैया ।

तैसेहि प्रेम निधो-सुख दया ॥२९॥
याहिन उमिला - जनक -दुलारी ।

माण्डवि श्रुति करति अति प्यारी ॥३०॥
अमित सरोवर-जहँ बन-उपवन ।

विपिन शिरोमणि-श्री कंचन वन ॥३१॥

पुष्प वाटिका - बाग - तड़ागा ।

अवलोकत उषजत अनुरागा ॥३२॥

दुधमती - अति पावन - गंगा ।

मज्जत होत सकल-दुख भङ्गा ॥३३॥

विमल "बिहार कुण्ड" अति पावन ।

जन्म कोटि अध औष नशावन ॥३४॥

अमल "रत्न सागर" जल राखी ।

गंगा सागर - कल्मष - नाशी ॥३५॥

जनक - सुनैना - सर जहँ राजै ।

सोता कुण्ड - मनोहर भ्राजै ॥३६॥
श्री जानकी महल सुपुनोता ।

दरसन करत मितत भव मोता ॥३७॥
"मिथिला-कनक-भवन" मन भावन ।

रामानन्द - आश्रम - जगपावन ॥३८॥
खिखो बन्म - बधैया गावों ।

ग्याह-ब्याह निरखि सुख पावों ॥३९॥

यह वर - श्री सियतू से मागैं ।

जन्म-जन्म तव-पद अनुरागैं ॥४०॥

दो. जय करुणा मखि जानकी, जयति जनकपुर धाम ।

"निधिरसमोद" सप्रेमपद, पुनि पुनि करत प्रणाम ॥

चालीसा रसमोदमयी, धाम जनकपुर केर ।

पाठ करै तिन प्रेम युत, पड़ै न पुनि भव फेर ।

श्रीजानकी-मन्दिर-स्तोत्रम् ।

जानकी मन्दिरं दिव्यमिन्दिरारमणार्चितम् । वन्दे

शश्वच्चिदानन्ददमानन्दरस सुन्दरम् ॥१॥

जानकी मन्दिरं वन्दे जानकीकान्त वल्लभम् ।

भाव माधुर्य सम्पूर्ण रसिकानां प्रियं धनम् ॥२॥

दिव्य ज्योति चिदानन्दां मन्त्रतन्त्रे प्रतिष्ठिताम् ।

वेद गुह्यांप्रपश्यन्ति जानकी मन्दिरे नराः ॥३॥

ब्रह्म विद्या विदां श्रेष्ठा ह्यन्तर्निष्ठा उपासते ।

जानकी मन्दिरे नित्यां परां शक्तिं सनातनीम् ॥४॥

अनतानन्त ब्रह्माण्डे मिथिला महिमावधिः ।

मिथिलाया महापूज्यं जानकी मन्दिरं सदा ॥५॥

जनकजा पदरेणु बिभूषितं-जनकजा पद प्रीति

प्रदायकम् । जनकजा रघुवीर विमोहनंभज !

मनो मम । जाननि मन्दिरम् ॥६॥

रसवतां रसमेव प्रवर्षकं सुखंवतां परमं सुखं

व्यञ्जकम् । गुणवतां गुणमेक प्रवद्धं क भज मनो

मम ! जानकि मन्दिरम् ॥७॥

सीता पदं नौमि मुनीन्द्र वन्द्यं सीतापदं वेद्यं

सुवेद गीतम् । सीतापदं भक्ति सुकीर्तनीयं वन्दे

सदा जानकि मन्दिरं तत् ॥८॥

फल श्रुतिः

जानकीमन्दिरस्तोत्रं सर्वदा सुखदं नृणाम् ॥ सिद्धि

ज्ञान-वैराग्य-भक्ति-प्रम-प्रदायकम् ॥१॥

इति श्री प्रेमनिधि प्रणीतं श्रीजानकी मन्दिर स्तोत्रम्

सच्चिदानन्द परमानन्द रस भरित, परम सुन्दर

तथा इन्दिरा रमण श्री हरि भी जिसको अचंता

करते हैं, उस नित्य शाश्वत परमदिव्य श्रीजानकी

मन्दिर की मैं वन्दना करता हूँ ।१। रसिकजनों
 का परमप्रिय हृदयधन, भाव माधुर्य, श्रीजानकी-
 कान्त राधवेन्द्रजूका भी प्राणवल्लभ, श्रीजानकी
 मन्दिर की मैं वन्दना करता हूँ ।२। सच्चिदान-
 न्दस्वरूपा दिव्यज्योति, जो मन्त्र तन्त्र यन्त्रों ने
 अपनी विचित्र शक्ति से विराजमान होकर भक्तों
 का परम कल्याण करतीं करती हैं, उस वेद
 वेदान्त की गुप्त रहस्य स्वरूपा ब्रह्मसत्ता का
 श्रीजानकी मन्दिर में भक्तजन प्रसन्नता पूर्वक
 प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं ।३। ब्रह्म विद्या विशारदों
 सर्वश्रेष्ठ सिद्ध सन्तजन नित्य सनातन परमशक्ति
 की अन्तर्निष्ठ होकर श्रीजानकी मन्दिर में उपा-
 सना करते हैं ।४।

अनन्तनन्त ब्रह्माण्डों में मिथिलापुरी को
 महिमा ही सर्वोपरि सीमा है, उस जनकपुरधाम

मैं भी श्रीजानकी मन्दिर ही सर्वदा परम पूज्य
माना जाता हूँ तब उसके स्वरूप का कौन वर्णन
कर सकता हूँ । ५। श्रीजनकराजकिशोरीजू की
चरणरेणु से बिभूषित, श्रीकिशोरीजू के श्रीचर-
णोंमें निरन्तर अबिच्छन्न प्रीति प्रदान करने वाले
श्रीसीताराम युगल शत्रुओंके भी मनको विमोहित
करने वाले श्रीजानकी मन्दिर का हे मेरे मन ।
तू भजन किया कर । ६। रसबन्त रसिक संतोंके
हृदयमें निरन्तर प्रेम रसको ही बरसाने वाले,
सुख की चाहना वालोंको परम दिव्य सुख का
अनुभव कराने वाले, तथा गुणोजनोंके सद्गुणों
को सदैव वढ़ने वाले श्रीजानकी मन्दिर का हे
मेरे मन । तू तो सीव भजन किया कर । ७।

मुनीन्द्रों से वन्दनीय श्रीसीतापद (श्रीजू के नित्य
निवास धाम) को मैं प्रणाम करता हूँ । वेदान्त

मैं सर्व श्रेष्ठ स्वरूप से गाये गये श्रीसीता पद का
 मैं हृदय में ज्ञान प्राप्त करता हूँ । उत्तर श्लोक
 वरेण्य कीर्ति श्रीसीता पद का मैं वचन से सप्रम
 उच्चारण करता हूँ तथा उस श्रीसीतापद वाच्य
 श्रीजानकी मैं सप्रेम बन्दना करता हूँ । ८। श्रीजा-
 नकी मन्दिर का यह स्तोत्र पाठ करने वाले सभी
 मनुष्यों को सदा सर्वदा सुख देने वाला है तथा
 रिद्धि सिद्धि ज्ञान बैराग एवं भगवान को प्रेम
 भक्ति प्रदान करने वाला है । १।

इति श्री प्रेमनिधि प्रणीतं श्रीजानकी मन्दिर स्तोत्रम्



श्री मिथिला जी को प्रार्थना

नित्यलीले, नित्य स्थले, नित्यधाम्ने नमोस्तुते धन्ये त्वं
मिथिले देवि । ज्ञानदा मुक्तिक् दायिनी रामस्वरूपे
वैदेही सीताजन्म प्रदायिनी पापदिध्वंसके मातर्भवबंध
विनिचिनी धन-दान-तपो ध्यान-स्वाध्याय फलदे सुभे
कामिना कामदे-तुभ्यं नमस्यामो वयं सदा नमस्ते
मिथिले पुण्ये सीताराम पदाङ्किते मुरादि पूजिते नित्ये
पराभक्ति प्रदे शुभे रामानन्दकरी तुभ्यं नमस्ते मुक्ति
दायिनी कीटा प्रतंगा मशकाश्च सर्वे,

जलेचरा भूमिचराश्च सर्वे ।

गच्छन्ति ते भूमिनिवास पुण्यात्

पर पदं योगिजनैर्दुरापम् ॥

अहं पापातिशुकत्पि त्वयामुक्तो न संशयः तस्मात्त्वां
मिथिले नित्यं नमस्यामि कृपां कुरु ।

जानकी मन्दिर शतवार्षिकी एवं
जगत् जननी जानकी नवमी के
मंगल मुदित अवसर पर

प्रकाशक :- बृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास समिति
जनकपुरधाम फोन नं. २०२, २६
जानकीनवमी २०५१ साल मूल्य :- रु. १।

(३००० प्रति)

—:✽:—

मुद्रक :- जागृति द्वारा बनाया जनकपुर-५ फो. २०५६४